पत्र सूचना शाखा
सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उ0प्र0

राज्यपाल ने एन0सी0सी0 के 70वें स्थापना दिवस कार्यक्रम में मार्च पास्ट की सलामी ली
एन0सी0सी0 जीवन में अनुशासन और अपने कर्तव्य के प्रति समर्पण का भाव सिखाता है - राज्यपाल

लखनऊः 27 नवम्बर, 2018

उत्तर प्रदेश के राज्यपाल श्री राम नाईक ने आज एन0सी0सी0 के 70वें स्थापना दिवस के अवसर पर गोमती रिवर फ्रंट पर आयोजित मार्च पास्ट की सलामी ली। कार्यक्रम में एन0सी0सी0 उत्तर प्रदेश के महानिदेशक मेजर जनरल ए0के0 सप्रा वी0एस0एम0, ब्रिगेडियर विक्रम रैना, एन0सी0सी0 एवं सेना के अन्य अधिकारीगण व बड़ी संख्या में कैडेटस उपस्थित थे। कैडेटस द्वारा इस अवसर पर पौधा रोपण, स्वच्छता आदि पर सामाजिक जागरूकता के लिये नुक्कड़ नाटक भी प्रस्तुत किये गये। कार्यक्रम में भारतीय विविधता को प्रदर्शित करने के लिये कैडेटस ने मनमोहक नृत्य भी प्रस्तुत किया।

राज्यपाल ने एन0सी0सी0 के अधिकारियों और कैडेटस को स्थापना दिवस की बधाई देते हुये कहा कि एन0सी0सी0 जीवन में अनुशासन और अपने कर्तव्य के प्रति समर्पण का भाव सिखाता है। एन0सी0सी0 का उद्देश्य देश में एकता और अनुशासन का निर्माण करना है। एन0सी0सी0 से जुड़े छात्र-छात्राओं को सम्बोधित करते हुये उन्होंने कहा कि कैडेटस अपना राष्ट्रधर्म निभायें। राज्यपाल ने कहा कि यहाँ राष्ट्रधर्म का मतलब अपना कर्तव्य है यानि कैडेटस अच्छी पढ़ाई करें और केवल किताबी कीड़े न बनें। दिमाग और शरीर दोनों को स्वस्थ रखें। उन्होंने कहा कि कैडेटस देश सेवा में अपना अमूल्य योगदान दें।

श्री नाईक ने कहा कि 23 करोड़ की आबादी वाला उत्तर प्रदेश देश का सबसे बड़ा प्रदेश है। विश्व के केवल तीन देश चीन, अमेरिका और इण्डोनेशिया आबादी की दृष्टि से उत्तर प्रदेश से बड़े हैं। उत्तर प्रदेश में 1.30 लाख एन0सी0सी0 कैडेटस हैं जो देश के सभी प्रदेशों से ज्यादा हैं। उन्होंने अपने विद्यार्थी जीवन को याद करते हुये कहा कि जब वे पुणे में विद्यार्जन कर रहे थे तो उन्हें भी एन0सी0सी0 के प्लाटून में सहभाग करने का अवसर मिला था। एन0सी0सी0 से जो भी सिखा व आज भी याद है। उन्होंने कहा कि युवा देश के प्रति समर्पण की भावना का संकल्प लें।

राज्यपाल ने कैडेटस को व्यक्तित्व विकास एवं जीवन में सफलता प्राप्ति के लिये के लिये चार मंत्र बताते हुये कहा कि सदैव मुस्कुराते रहें, दूसरों की सराहना करना सीखें, दूसरों की अवमानना न करें क्योंकि यह गति अवरोधक का कार्य करती हैं, अहंकार से दूर रहें तथा हर काम को अधिक अच्छा करने पर विचार करें। उन्होंने 'चरैवेति! चरैवेति!!' को उद्धृत करते हुए कहा कि सफलता का मर्म निरन्तर आगे बढ़ने में है।

कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान से हुआ।

अंजुम/ललित/राजभवन (465/46)